प्राचीन भारतीय इतिहास में विज्ञान व तकनीकि

शैलेन्द्र कुमार यादव

भारत में वैज्ञानिक अनुसंधानो और अविष्कारों की परंपरा आदि काल से चली आ रही है। जिस समय यूरोप में घुमक्कड़ जनजातियॉ बस रही थी उस समय सिन्धु घाटी के लोग सुनियोजित नगर बसाकर रहते थे मोहनजोदड़ो, हडप्पा, कालीबंगा, लोथल, चंहुदड़ों, बनवाली, सुरकोटड़ा आदि स्थानो पर हुई खुदाई में मिले नगरो के खंडहर इसके प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। इन नगरो के भवन, सड़के, नालियॉ, स्नानागार, कोठार आदि पक्की ईटों के बने थे। यहॉ के निवासी जहाजों द्वारा विदेश से व्यापार करते थे। माप–तौल का ज्ञान उन्हें था। परिवहन के लिए बैल गाड़ी का उपयोग होता था। कृषि उन्नत अवस्था में थी। वे कॉसे का उपयोग करते थे कॉसे के बने हथियार और औजार इसका प्रमाण है। सुनार सोने, चॉदी और बहुमूल्य रत्नों के आभूषण बनाते थे। इसका अर्थ यह हुआ कि ये लोग खनन विद्या में पारंगत थे। कठोर रत्नो को काटने, गढ़ने, छेद करने के लिए उनके पास उन्नत कोटि के उपकरण थे। ये लोग ऊनी और सूती वस्त्र बनाना जानते थे। इन लोगों की संस्कृति को इतिहासकार हड़प्पा संस्कृति के नाम से जानते थे।